Date:
Page No.

"रामकुमार वर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

रामकुमार वर्मा का जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिला में 15 सितम्बर सन् 1905 ई० को हुआ था। इनके माता का नाम राजरानी देवी एवं पिता का लक्ष्मी प्रसाद वर्मा था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मध्य प्रदेश में हुई। उच्च शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम०ए० तथा नागपुर से पी० एच-डी० की उपाधि प्राप्ति की। रामकुमार वर्मा प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में प्राध्यापक और फिर विभागाध्यक्ष रहे। रामकुमार वर्मा को भारत सरकार ने पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया है। रामकुमार वर्मा आधुनिक युग के हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि, आलोचक एवं एकांकीकार हैं। 'चित्ररेखा' काव्य-संग्रह पर इन्हें हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ 'देव पुरस्कार' मिला है। साथ ही 'सप्त किरण' एकांकी संग्रह पर अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन पुरस्कार और मध्यप्रदेश शासन परिषद से 'विजयपर्व' नाटक पर प्रथम पुरस्कार मिला है।

हिन्दी एकांकी के जनक एवं एकांकी सम्राट रामकुमार वर्मा ने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक विषयों पर लगभग 50 से अधिक एकांकी लिखी हैं। रामकुमार वर्मा की रचनाएँ —

1. एकांकी संग्रह — पृथ्वीराज की आँखें, रेशमी टाई, चारुमित्रा, विभूति, सप्त किरण,

Date:
Page No.

रूपरंग, रजतरश्मि, त्रयतुराज, दीपदान, रिमझिम, इन्द्रधनुष, पाँचजन्य, कौमुदी महोत्सव, मयूर पंख, खट्टे-मीठे एकांकी, ललित एकांकी, कैलेण्डर का आखिरी पन्ना, जूही के फूल आदि।

2. नाटक — विजय पर्व, कला और कृपाण, नाना फड़नवीस, सत्य का स्वप्न आदि

3. काव्य — चित्ररेखा, चन्द्रकिरण, अंजलि, अभिशाप, रूपराशि, संकेत, एकलव्य, वीर हम्मीर, निशीथ, नूरजहाँ, जौहर, आकाशगंगा, उत्तरायण, कृतिका।

4. आलोचना एवं साहित्येतिहास — कबीर का रहस्यवाद, इतिहास के खंड, साहित्य समालोचना, साहित्यशास्त्र, अनुशीलन, समालोचना समुच्चय, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास।

5. सम्पादन — हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास।

05 अक्टूबर 1990 में रामकुमार वर्मा का निधन हो गया।

रामकुमार वर्मा की ऐतिहासिक एकांकी भारतीय सांस्कृतिक आदर्शों को प्रतिबिम्बित करती है। नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था, आदर्शवाद तथा पात्रों का मानसिक अन्तर्द्वन्द्व उनकी एकांकी कला की विशिष्ट शैली है। रामकुमार वर्मा के एकांकी रंगमंच के सर्वथा अनुकूल हैं।

Date:
Page No.

रामकुमार वर्मा के ध्वनि-रूपक समय-समय पर आकाशवाणी से सफलतापूर्वक प्रसारित किए जाते रहे हैं। विश्वविद्यालय समारोहों में अभिनय-व्यवस्था में रामकुमार वर्मा ने अपना विशेष योगदान दिया। रंगमंचीयता की दृष्टि 'बादल की मृत्यु' एकांकी उन्होंने 1930 में लिखा, जो अति सफल हुआ। यह एकांकी आज भी फैंटेसी एकांकियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। रामकुमार वर्मा के एकांकियों में मनोभावों का सूक्ष्म चित्रण देखने को मिलता है। सामाजिक एकांकियों में हास्य एवं व्यंग्य की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। उनके ऐतिहासिक एकांकी उनकी आदर्शवादी दृष्टि के लिए प्रसिद्ध हैं।